INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

CTET

(CENTRAL TEACHER ELIGIBILITY TEST

प्राइमरी लेवल

HANDWRITTEN NOTES

भाग-3 संस्कृत

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

केंद्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा

CTET

प्राथमिक स्तर (Primary Level)

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।
हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ऊँ।।

भाग – 3 संस्कृत (I&II)

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET)" (प्राथमिक स्तर)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION (CBSE)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET)" (प्राथमिक स्तर)"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें* **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/hvnbp7

Online Order करें - https://shorturl.at/nM368

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

	संस्कृत	
क्र.सं.	अध्याय	पेज
1.	शब्द रूप	1
2.	धातु रूप	11
3.	कारक	19
4.	अव्यय + उपसर्ग	24
5.	प्रत्यय	33
6.	सन्धि	38
7.	समास	49
8.	सर्वनाम	60
9.	विशेषण एवं विशेष्य	67
10.	उच्चारण स्थान	73
11.	लिंग	77
12.	विलोम शब्द	80
13.	वाच्य परिवर्तन	88
14.	छंद	97
15.	अलंकार	100
16.	अपठित गद्यांश	106
17.	पद्यांश	117
18.	संस्कृत भाषा की शिक्षण विधियाँ	120

अध्याय - I

शब्दरूप

1. अकारान्त पुंलिX एकवचन

विभक्ति	राम	श्याम	शिक्षक	देव	बालक
प्रथमा	रामः	श्यामः	शिक्षकः	देवः	बालकः
द्वितीया	रामम्	श्यामम्	शिक्षकम्	देवम्	बालकम्
तृतीया	रामेण	श्यामेन	शिक्षकेण	देवेन	बलकेन
चतुर्थी	रामाय	श्यामाय	शिक्षकाय	देवाय	बालकाय
पञ्चमी	रामात्	श्यामात्	शिक्षकात्	देवात्	बालकात्
षष्ठी	रामस्य	श्यामस्य	शिक्षकस्य	देवस्य	बालकस्य
सप्तमी	रामे	श्यामे	शिक्षके	देवे	बलके
सम्बोधन	हे राम!	हे श्याम!	हे शिक्षक!	हे देव!	हे बालक!

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अकारान्त पुंलिX द्विवचन

विभक्ति	राम	श्याम	शिक्षक	देव	बालक
प्रथमा	रामौ	श्यामौ	शिक्षकौ	देवौ	बालकौ
द्वितीया	रामौ	श्यामौ	शिक्षकौ	देवौ	बालकौ
तृतीया	रामाभ्याम्	श्यामाभ्याम्	शिक्षकाभ्याम्	देवाभ्याम्	बालकाभ्याम्
चतुर्थी	रामाभ्याम्	श्यामाभ्याम्	शिक्षकाभ्याम्	देवाभ्याम्	बालकाभ्याम्
पञ्चमी	रामाभ्याम्	श्यामाभ्याम्	शिक्षकाभ्याम्	देवाभ्याम्	बालकाभ्याम्
षष्ठी	रामयोः	श्यामयोः	शिक्षकयोः	देवयोः	बालकयोः
सप्तमी	रामयोः	श्यामयोः	शिक्षकयोः	देवयोः	बालकयोः
सम्बोधन	हे रामौ!	हे श्यामौ!	हे शिक्षकौ!	हे देवौ!	हे बालकौ!

अकारान्त पुलिX बहुवचन

विभक्ति	राम	श्याम	शिक्षक	देव	बालक
प्रथमा	रामाः	श्यामाः	शिक्षकाः	देवाः	बालकाः
द्वितीया	रामान्	श्यामान्	शिक्षकान्	देवान्	बालकान्
तृतीया	रामैः	श्यामैः	शिक्षकैः	देवैः	बालकैः
चतुर्थी	रामेभ्यः	श्यामेभ्यः	शिक्षकेभ्यः	देवेभ्यः	बालकेभ्यः
पञ्चमी	रामेभ्यः	श्यामेभ्यः	शिक्षकेभ्यः	देवेभ्यः	बालकेभ्यः
षष्ठी	रामाणाम्	श्यामानाम्	शिक्षकाणाम्	देवानाम्	बालकानाम्
सप्तमी	रामेषु	श्यामेषु	शिक्षकेषु	देवेषु	बालकेषु
सम्बोधन	हे रामाः!	हे श्यामाः!	हे शिक्षकाः!	हे देवाः!	हे बालकाः!

2. इकारान्त पुंलिX एकवचन

विभक्ति	हरि	मुनि	ऋषि	कवि	श्रवि
प्रथमा	हरिः	मुनिः	ऋषिः	कविः	रविः
द्वितीया	हरिम्	मुनिम्	ऋषिम्	कविम्	रविम्
तृतीया	हरिणा	मुनिना	ऋषिणा	कविना	रविणा
चतुर्थी	हरये	मुनये	ऋषये	कवये	रवये
पञ्चमी	हरेः	मुनेः	ऋषेः	कवेः	रवेः
षष्ठी	हरेः	मुनेः	ऋषेः	कवेः	रवेः
सप्तमी	हरौ	मुनौ	ऋषौ	कवौ	रवौ
सम्बोधन	हरे!	हे मुने!	हे ऋषे!	हे कवे!	हे रवे!

इकारान्त पुंलिX द्विवचन

प्रथमा	हरी	मुनी	ऋषी	कवी	रवी
द्वितीया	हरी	मुनी	ऋषी	कवी	रवी
तृतीया	हरिभ्याम्	मुनिभ्याम्	ऋषिभ्याम्	कविभ्याम्	रविभ्याम्
चतुर्थी	हरिभ्याम्	मुनिभ्याम्	ऋषिभ्याम्	कविभ्याम्	रविभ्याम्
पञ्चमी	हरिभ्याम्	मुनिभ्याम्	ऋषिभ्याम्	कविभ्याम्	रविभ्याम्
षष्ठी	हर्योः	मुन्योः	ऋष्योः	कव्योः	रव्योः
सप्तमी	हर्योः	मुन्योः	ऋष्योः	कव्योः	रव्योः
सम्बोधन	हे हरी!	हे मुनी!	हे ऋषी!	हे कवी!	हे रवी!

इकारान्त पुंलिX बहुवचन

प्रथमा	हरयः	ऋषयः	रवयः	मुनयः	कवयः
द्वितीया	हरीन्	ऋषीन्	रवीन्	मुनीन्	कवीन्
तृतीया	हरिभिः	ऋषिभिः	रविभिः	मुनिभिः	कविभिः
चतुर्थी	हरिभ्यः	ऋषिभ्यः	रविभ्यः	मुनिभ्यः	कविभ्यः
पञ्चमी	हरिभ्यः	ऋषिभ्यः	रविभ्यः	मुनिभ्यः	कविभ्यः
षष्ठी	हरीणाम्	ऋषीणाम्	रवीणाम्	मुनीनाम्	कवीनाम्
सप्तमी	हरिषु	ऋषिषु	रविषु	मुनिषु	कविषु
सम्बोधन	हे हरयः!	हे ऋषयः!	हे रवयः!	हे मुनयः!	हे कवयः!

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

3.उकारान्त पुंलिग एकवचन

विभक्ति	गुरू	भानु	शम्भु	शिशु	साधु
प्रथमा	गुरूः	भानुः	शम्भुः	शिशुः	साधुः
द्वितीया	गुरूम्	भानुम्	शम्भुम्	शिशुम्	साधुम्
तृतीया	गुरूणा	भानुना	शम्भुना	शिशुना	साधुना

अध्याय - 6

सन्धिः

- सम् + √धा + कि = सन्धिः (पुँल्लिX)
- 'सन्धि' शब्द का अर्थ हैं - मेल या योग अर्थात् मिलना।
- **"वर्णानां परस्परं विकृतिमत् सन्धानं सन्धिः"** अर्थात् वर्णों का आपस में विकारसहित मिलना 'सन्धि' कहलाता हैं। 'विकृति' का मतलब हैं - वर्णपरिवर्तन।
- इस प्रकार दो वर्णों के मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता हैं, उसे 'सन्धि' कहते हैं।

जैसे -

(i) रमा + ईशः = रमेशः
(ii) रम् आ ईशः (आ + ई का मेल)
(iii) रम् ए शः (आ + ई = 'ए' हो गया)
(iv) रमेशः (गुण सन्धि)

स्पष्टीकरण - उपर्युक्त उदाहरण में रमा के 'मा' में विद्यमान 'आ' तथा ईशः का 'ई' मिलकर 'ए' (वर्णपरिवर्तन) हो गया। यह वर्णविकार या वर्णपरिवर्तन ही सन्धि हैं।

❖ **संहिता** - 'सन्धि' के लिए अनिवार्य तत्त्व हैं - संहिता।

सूत्र - "परः सन्निकर्षः संहिता"

अर्थात् दो वर्णों का अत्यन्त सन्निकट हो जाना ही 'संहिता' हैं।

❖ 'संहिता' के विषय में व्याकरणशास्त्र में एक नियम प्रसिद्ध हैं कि -

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।

नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ।।

(i) संहिता (सन्धि) एक पद में नित्य होती हैं।
जैसे -
नै + अकः = नायकः
पौ + अकः = पावकः
भो + अनम् = भवनम्

(ii) उपसर्ग और धातु में संहिता नित्य (अनिवार्य) होती हैं -
जैसे -
नि + अवसत् = न्यवसत्
प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति
अधि + आगच्छति = अध्यागच्छति

(iii) सामासिक पदों में संहिता अनिवार्य (नित्य) होगी -
जैसे -
देवस्य आलयः (सामासिक विग्रह)
देव + आलयः = देवालयः
कृष्णस्य अस्त्रम् (सामासिक विग्रह)
कृष्ण + अस्त्रम् = कृष्णास्त्रम्

(iv) वाक्य में संहिता (सन्धि) विवक्षाधीन होती हैं अर्थात् आपकी इच्छा के अधीन हैं कि आप चाहें तो सन्धि करें या चाहें तो न करें -

जैसे -

❖ रामः गच्छति वनम्। (सन्धि नहीं हुई)
रामो गच्छति वनम्। (सन्धि कार्य हुआ)
❖ अत्र कः अस्ति। (सन्धि नहीं हुई)
❖ द्वाविंशे एवं वर्षे इन्दुमती अधिजगाम स्वर्गम्। (सन्धि नहीं हुई)

- **सन्धि विच्छेद** - सन्धि युक्त वर्णों को अलग-अलग करना ही सन्धि विच्छेद हैं।
  सन्धि = मिलना **विच्छेद** = अलग करना।
  जैसे - गणेशः का सन्धिविच्छेद होगा = गण + ईशः।
  'विद्यार्थी' का विच्छेद होगा = विद्या + अर्थी।

- **सन्धि में क्या होगा - - - - - ?**

1. दो वर्णों के स्थान पर एक नया वर्ण हो जाता हैं -

जैसे -
रवि + ईशः = रवीशः (इ + ई = ई)

सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः (अ + इ = ए)

सदा + एव = सदैव (आ + ए = ऐ)

एकः पूर्वपरयोः (6.1.84) पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर एक आदेश होगा।

2. **दो वर्णों के निकट आने से केवल पूर्व वर्ण में ही विकार (परिवर्तन) होता हैं।**

जैसे -

इति + आदिः = इत्यादिः (इ के स्थान पर य्)

मधु + अरिः = मध्वरिः (उ के स्थान पर व्)

ने + अनम् = नयनम् (ए के स्थान पर अय्)

'एकस्थाने एकादेशः' - एक स्थान पर एक आदेश होगा।

3. **दो वर्णों में से किसी वर्ण का लोप हो जाता हैं -**

जैसे - रामः आगच्छति = राम आगच्छति (विसर्ग का लोप)

दोषः अस्ति = दोषोऽस्ति (अकार का लोप)

4. **दो वर्णों में से किसी एक वर्ण का द्वित्व हो जाना।**

जैसे - एकस्मिन् + अवसरे = एकस्मिन्नवसरे

5. **कभी कभी दोनों वर्णों में साथ-साथ परिवर्तन होगा।**

जैसे - तत् + शिवः = तच्छिवः

वाक् + हरिः = वाग्घरिः

यहाँ 'त् + श्' वर्णों में सन्धि हुई तो त् को 'च्' तथा श् को 'छ्' हो गया।

6. **कभी कभी दोनों वर्णों के बीच कोई तीसरा वर्ण चला आएगा।**

जैसे - वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया

यहाँ 'क्ष' एवं 'छ' के बीच 'च्' के रूप में एक नया वर्ण आ गया।

प्रकार -

(1) स्वर संधि (अच्)

(2) व्यंजन संधि (हल्)

(3) विसर्ग संधि

(1) स्वर संधि
- → दीर्घ संधि
- → गुण संधि
- → वृद्धि संधि
- → यण् संधि
- → अयादि संधि

इसके अतिरिक्त दो और हैं - पूर्वरूप संधि, पररूप संधि

(a) दीर्घ संधि :- अकः सवर्णे दीर्घः

नियम :-

अ/आ + आ/अ = आ

इ/ई + इ/ई = ई

उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ

ऋ + ऋ = ॠ

Ex - परमात्माः = परम + आत्मा (अ + आ = आ)

रवीन्द्रः = रवि + इन्द्रः (इ + इ = ई)

वधूत्सवः = वधू + उत्सव (ऊ + उ = ऊ)

पितॄणम् = पितृ + ऋणम् (ऋ + ऋ = ॠ)

दीर्घ सन्धि के उदाहरण

1. हिम + आलयः (सन्धि विच्छेद)

हिम् अ + आलयः (वर्ण विच्छेद)

हिम आ लयः (दो वर्णों के स्थान पर दीर्घ 'आ' आदेश)

हिमालयः (सन्धियुक्त पद)

उपर्युक्त उदाहरण में 'हिम' के म में विद्यमान 'अ' आलयः के 'आ' से मिलकर दीर्घ 'आ' हो गया।

(21) कं + पनम् = कम्पनम्

(22) गुं + फितः = गुम्फितः

(23) लं + बः = लम्बः

(24) स्तं + भः = स्तम्भः

(h) **छत्व सन्धि** :- शश्छोऽटि

पूर्व पद - सकार

Ex. = तद् + शिवः = तच्छिवः

परवर्ण - शकार

सत् + शीलः = सच्छीलः

Change – छकार हो जाता हैं।

➢ ***विसर्ग संधि***

सत्व सन्धि :-

(1) *विसर्जनीयस्य सः* :- कुछ नियमों को देखना पड़ता हैं -

नियम :- पूर्व पद + परवर्ण = आदेश

विसर्ग (ः) + खर् (वर्ग का 1, 2 वर्ण / श ष स) = स्, ष्, श्

(a) (**विसर्ग** (ः) + क् / त् = स्

Ex.= नमः + कार = नमस्कार

नमः + ते = नमस्ते

(b) (**विसर्ग** (ः) + च / छ = श्)

Ex. = निः + चल = निश्चल

निः + छल = निश्छल

कः + चित् = कश्चित्

(c) (**विसर्ग** (ः) + क, ख / ट,ठ / प,फ = ष्)

Ex. = धनुः + टंकार = धनुष्टंकार

निः + प्राण = निष्प्राण

रामः + टीकते = रामष्टीकते

(2) **रुत्व सन्धि** :-

(a) *ससजुषोरुः* :- पूर्व पद + परवर्ण = आदेश

(अ/आ) को छोड़कर + स्वर/ = तो (र्) होता

अन्य स्वर आना/ वर्ग का 1,2,3 हो

विसर्ग (ः)

Ex. = निः + बल = निर्बलः

[यदि विसर्ग का मेल व्यंजन से हो, तो

दुः + बल = दुर्बलः आधा (र्) बनता हैं।]

निः + उत्तर = निरुत्तरः [यदि विसर्ग का मेल स्वर से हो

पितुः + इच्छा = पितुरिच्छा तो पूरा (र) बनता हैं।

(3) **उत्व सन्धि** :-

(a) *अतो रोर प्लुतादप्लुते* :-

पूर्वपद + परवर्ण = आदेश

विसर्ग से पहले + (अत्) हो, तो (र) के स्थान पर (उ) हो जाता।

(अ) होना

Ex. = रामः + अवदत् = रामोऽवदत्

शिवउ + अवदत् = शिवोऽवदत्

(b) *रोरि* :- र् के बाद र् आये तो पूर्व (र्) का लोप।

Ex. = पुनर + रमते = पुनरमते

अध्याय -16

अपठित गद्यांश

गद्यांशः 1

सत्सXतेः महिमानं को न जानाति? संसारे सज्जनाः अपि दुर्जनाः अपि सन्ति। दुर्जनस्य सXतिं कोऽपि कर्तुं न इच्छति। अपरत्र सत्सXम् विना मानवस्य जीवनम् एवं दुर्जीवनं भवति। वस्तुतः सत्सXतिः जनानां पोषिका कुसXतिश्च नाशिका। सर्वे जनाः स्वपोषमेव इच्छन्ति विनाशं तु न इच्छन्ति। अतः सत्सXतिः एवं श्रेयसी। सज्जनाः तु स्वगुणैः एव सन्तः कथ्यन्ते, अत एव जनः सज्जनानां गुणेभ्यः स्पृहयन्ति। सद्गुणेनैव जनः मनसा वाचा कर्मणा स्वस्थो भवति। तेन तस्य आयुः वर्धते, यशः अपि सततं वर्धते। को न जानाति यत् सर्वेषा देशानां महापुरूषाः अपि सत्सXत्या श्रेष्ठं पदवीं प्राप्नुवन्।

1. 'दुर्जनाः' इति पदे कः उपसर्गः?

(क) दुस्

(ख) दु

(ग) दुर्

(घ) दुर्जः

उत्तर (ग)

2. 'कुसXतिश्च' इति पदस्य विच्छेदं कुरूत –

(क) कु + सXतिश्च

(ख) कुसXति + च

(ग) कुसXतिः + श्च

(घ) कुसXतिश + च

उत्तर (ख)

3. 'अलभन्त' इत्यर्थे अत्र गद्यांशे कि पदं प्रयुक्तम् ?

(क) प्राप्तः

(ख) प्राप्तवान्

(ग) प्राप्नुवन्

(घ) अप्राप्तः

उत्तर (ग)

4. 'पोषिका' इति पदे कः प्रत्ययः ?

(क) टाप्

(ख) ङीप्

(ग) ङीष्

(घ) क्यप्

उत्तर (क)

5. 'जनाः गुणेभ्यः स्पृहयन्ति' अत्र 'जनाः' वचनम् किम् ?

(क) एकवचनम्

(ख) द्विवचनम्

(ग) बहुवचनम्

(घ) कोऽपि न

उत्तर (ग)

6. 'महापुरूषाः' इति पदे कः समासः?

(क) द्विगुसमासः

(ख) द्वन्द्व समासः

(ग) कर्मधारयसमासः

(घ) अव्ययीभाव समासः

उत्तर (ग)

8. 'श्रेष्ठां पदवीम्' अनयोः विशेषणपदं किम् ?

(क) पदवीं

(ख) सत्सXतिम्

(ग) श्रेष्ठां

(घ) प्राप्तः

उत्तर (ग)

9. 'यशः अपि सततं वर्धते।' अत्र किम् अव्ययपदं प्रयुक्तम् ?

(क) यथा

(ख) अत्र

(ग) एव

(घ) अपि

उत्तर (घ)

10. 'सन्ति' इति पदे कः लकारः ?

(क) लोट्लकारः

(ख) विधिलङ्लकारः

(ग) लट्लकारः

(घ) लृट्लकारः

उत्तर (ग)

गद्यांशः 2

संस्कृतभाषा भारतीयभाषाणां जननी अस्ति। अनया भाषया सर्वाः प्रान्तीयभाषाः अनुप्राणिताः प्रभाविताः च सन्ति। इयं भाषा अतीव सरला मधुरा चास्ति। श्रुतिः उपनिषत् पुराणं दर्शनम् अन्यानि च शास्त्राणि संस्कृते एव रचितानि सन्ति। श्रुतयः चतस्रः सन्ति – ऋक्, यजुः, साम, अथर्व इति। श्रुतीनामाशयं स्मृतयः प्रतिपादयन्ति। यद्यपि बह्व्यः समृतयः सन्ति तथापि मनुस्मृतिः याज्ञवल्क्यसमृतिः चेति द्वे स्मृती प्रसिद्धे स्तः।

1. 'यद्यपि' इत्यत्र सन्धि-विच्छेदः कः?

(A) यदी + अपि (B) यद्य् + अपि

(C) यदि + अपि (D) यदि+ अपि।

Ans. (C)

2. श्रुतीनामाशयं काः प्रतिपादयन्ति ?

(A) वेदाः (B) स्मृतयः

(C) श्रुतयः (D) उपनिषदः।

Ans. (B)

3. "स्मृती" इत्यस्मिन् पदे का विभक्तिः ? किं वचनं च ?

(A) प्रथमा – एकवचनम्

(B) द्वितीया – एकवचनम्

(C) प्रथमा – द्विवचनम्

(D) द्वितीया – बहुवचनम्।

Ans. (C)

4. 'चतस्रः' इत्यस्य पदस्य पुँ,,X रूपं भवत् –

(A) चत्वारि (B) चतुरः

(A) अमेरिकादेशवासिभिः

(B) भारतदेशवासिभिः

(C) इग्लैण्डदेशवासिभिः

(D) जर्मनीदेशवासिभिः

(iii) शासनसत्ताधिकारिणः भयकारणं न भवन्ति -

(A) राजतन्त्रे (B) प्रजातन्त्रे

(C) A,B द्वयोऽपि (D) एकोऽपि न

(iv) बहवः' इति पदस्य विशेष्यपदं किम्?

(A) गुणाः (B) जनः

(C) विचारः (D) देशः

(v) प्रजाभिः प्रजानां प्रजार्थं च शासनम् एव प्रजातन्त्रम्। रेखांकित पदे विभक्तिः अस्ति -

(A) तृतीया, एकवचन (B) द्वितीया, एकवचन

(C) द्वितीया, बहुवचन (D) तृतीया, बहुवचन

उत्तरमाला- (i).D (ii).C (iii).B (iv).A (v).D

गद्यांशः 5

दक्षिणात्ये जनपदे काञ्ची नाम नगरी आतीत्। काञ्चीं नगरीं निकषा एकः न्यग्रोधतरुः आसीत्। लघुपतनकः नाम वायसः तं तरूम् अधितिष्ठति स्म। सः एकदा तरूं निकषा कञ्चन दुरात्मानं व्याधम् अपश्यत्। तं दृष्ट्वा सः अचिन्तयत् - "धिक् एवं पापात्मानं यः प्राणिनः हन्ति। किञ्च किम् एतेन निन्दा वचनेन। इदानीं वटवासिनः पक्षिणः बोधयामि, अन्यथा एषः व्याधः तान् ग्रहीष्यति"। ततः सः सर्वान् वटवासिनः पक्षिणः अबोधयत् - "भोः पक्षिणः! दुर्मनसं व्याधं पश्यत, एषः हस्ते तण्डुलान् जालं च गृहीत्वा आगच्छति। जालं प्रसार्य तण्डुलान् विकरिष्यति।। तण्डुलान् खादितुं मा गच्छत, अन्यथा सः भवतः सर्वान् जालेन बद्ध्वा नेष्यति।

1 वायसस्य नाम किम् ?

(A) दर्मनसः (B) लघुपत्तनकः

(C) न्यग्रोधः (D) काञ्ची।

Ans. (B)

2 'प्रसार्य' इत्यत्र कः प्रत्ययः ?

(A) यत् (B) ण्यत्

(C) ल्यप् (D) क्यप्।

Ans. (C)

3 'दुर्मनसम्' इत्यत्र कः उपसर्गः ?

(A) दुः (B) दुस्

(C) दु (D) दुर्।

Ans. (D)

4 'पश्यत' इत्यत्र धातुं लकार - पुरूष वचनानि कानि ?

शिक्षण सहायक सामाग्रयः

पारम्परिकम्	आधुनिकम्
प्राचीन समय से	दूरदर्शनम्
भाषा शिक्षण में	Projector
हम जिन उपकरणो	कम्प्यूटर आधारित
प्रयोग करते आ रहे हैं -	कक्षा

- श्यामपट्ट (Blackboard)
- पाठ्यपुस्तकम् (9.M)
- चित्रम्
- मानचित्राणि
- पत्रिकाएँ

❖ दृश्योपकरणाम् (दृश्य साधन) :- दृश्य साधनों द्वारा शुद्ध लेखन तथा शुद्ध उच्चारण का अभ्यास किया जाता हैं।

❖

दृश्यसामग्री

सामान्य दृश्यसाधन	यांत्रिक दृश्यसाधन
- श्यामपट्ट	- उन्नत शीर्ष प्रक्षेपिका
- चित्र, मानचित्र, रेखाचित्र	(आवरहैड प्रोजेक्टर)
- प्रतिरूप (मॉड्ल)	- चित्र
- चार्ट	विस्तारक यंत्र
- पाठ्यपुस्तक	
- बाल साहित्य	
- संग्रहालय	

❖ **श्यामपट्ट :-** यह संस्कृत शिक्षण में परम्परागत सहायक उपकरण हैं।

- दृश्य साधनों में सर्वोत्तम साधन हैं।
- शिक्षा जगत् में श्यामपट्ट देने का श्रेय - जेक्स विलियमस को दिया जाता हैं।
- प्राथमिक स्तर पर अक्षर ज्ञान कराने के लिए तथा छात्रो के लेखन कौशल को विकसित करने में श्यामपट्ट उपयोगी हैं।
- श्यामपट्ट का उपयोग करके शिक्षक छात्रो की वर्तनी तथा उच्चारण संबंधी त्रुटियों को दूर कर सकता हैं।
- श्यामपट्ट को संस्कृत अध्यापक का मित्र माना जाता हैं।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- ❖ चित्र :- संस्कृत भाषा शिक्षण को रोचक व सुग्राह्य बनाने में शिक्षक रंगीन व आकर्षक चित्रो का प्रयोग कर सकता हैं।
- चित्र के माध्यम से अमूर्त वस्तु अथवा उसकी संकल्पना मूर्तिमान हो उठती हैं।
- ❖ मानचित्र :- संस्कृत भाषा - शिक्षण करते समय छात्रो को किसी नगर की ऐतिहासिक तथा भौगोलिक स्थिति समझाने के लिए मानचित्रो का प्रयोग किया जा सकता हैं। जैसे :- तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशीला आदि की स्थिति दर्शाने हेतु
- ❖ रेखाचित्र :-
- रेखाओ द्वारा आकृति प्रदान करके भी विषय वस्तु को स्पष्ट किया जा सकता हैं।
- किसी बिन्द का वर्गीकरण दर्शाने में भी रेखाचित्र सहायक होते हैं जैसे-व्याकरण शिक्षण करते समय, सन्धि, समास, प्रत्यय उपसर्ग आदि का भेद दर्शाने के लिए।

- ❖ **मॉड्ल/प्रतिरूप :-**
- किसी वस्तु की उपयुक्त व सुविधाजनक दृष्टि से की गई नकल प्रतिरूप होती हैं।
- आकार में बड़ी व दूर होने के कारण कई वस्तुओ, साधनो तथा स्थलो का कक्षा - कक्ष में प्रदर्शन संभव नहीं है, अतः उनके प्रतिरूप कक्षा में छात्रो के समक्ष प्रस्तुत किया जाता हैं। जैसे- ताजमहल, ग्लोब आदि।
- ❖ चार्ट :- संस्कृत भाषा शिक्षण करते समय तुलनात्मक अध्ययन करवाने के लिए शब्द रूप तथा धातुरूपो का विभिन्न विभक्तियों में स्वरूप बताने की दृष्टि से चार्ट का प्रयोग किया जाता हैं।

2. श्रव्यसामग्री

- आकाशवाणी (रेड़ियो) :-
- ग्रामोफोन
- टेपरिकार्डर
- लिंगवाफोन
- भाषाप्रयोगशाला :- बच्चो के उच्चारण में कोई समस्या हैं तो उसको भाषा प्रयोगशाला में ले जाकर बार-बार Practice कराया जाता हैं।

3. दृश्यश्रव्यसामग्री

- दृश्यश्रव्य सामग्री से बच्चे किसी भी विषय को देखकर तथा सुनकर समझते हैं।
- दृश्यश्रव्य सामग्री से शिक्षार्थियों का ज्ञान स्पष्ट एवं स्थायी होता हैं -
- ❖ टेलीविजन :- संस्कृत भाषा से संबंधित बहुत सारे कार्यक्रम आजकल टेलीविजन के माध्यम से प्रसारण किए जाते हैं।
- कम्प्यूटर :-
- चलचित्र (Movies) :- बालको को महापुरूषो के जीवन पर आधारित एवं देशभक्ति फिल्में भी दिखाई जा सकती हैं जो बालको के लिए उपयोगी एवं चरित्र निर्माण वाली हैं।
- नाटक :- नाटक से श्रव्य काव्य से अधिक रमणीयता होती हैं। नाटक विषय वस्तु का अभिनय के द्वारा सजीव चित्रण किया जा सकता हैं।

<u>संस्कृत पाठ्यपुस्तकानि</u>

- पुस्तक :- Book शब्द जर्मन भाषा के वीक (Beach) शब्द से बना हैं, जिसका अर्थ है - वृक्ष।
- पाठ्यपुस्तक :- पाठ्यपुस्तक से हमारा अभिप्राय उस पुस्तक से हैं, जिसका प्रयोग कक्षा-शिक्षण में शिक्षक व छात्रो द्वारा किया जाता हैं। आज हमारी सम्पूर्ण शिक्षण व्यवस्था पाठ्यपुस्तक पर ही आधारित हैं।
- पाठ्पुस्क शिक्षण का आधार होती हैं।
- शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ति, मूल्यांकन, पाठ-नियोजन, पक्तिांशो की पुनरावृत्ति, गृहकार्य, आदि के लिए महत्त्वपूर्ण दृश्य सामग्री हैं।
- ❖ **पाठ्यपुस्तक की उपयोगिता :-**
- शिक्षक का कार्य सरल करने हेतु
- मार्गदर्शन हेतु सहायक
- अव्यवस्थित ज्ञान को व्यवस्थित करने में
- ❖ पाठ्यपुस्तक के उद्देश्य :-
- बालकों के ज्ञान की सीमा का विस्तार करना।
- छात्रो में कल्पना शक्ति का विकास
- सृजनात्मक शक्ति का विकास करना।
- संस्कृत साहित्य के प्रति रूचि उत्पन्न करना।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्तूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

FREE SAMPLE

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
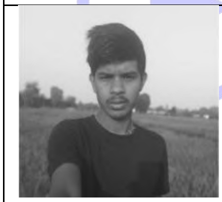	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
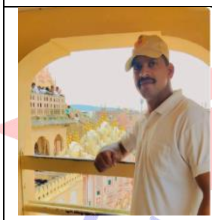	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/hvnbp7

Online order करें – https://shorturl.at/nM368

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE